प्रथम अध्याय :

निराला का व्यक्तित्व पूर्व कृतित्व
10. निराला का व्यक्तिकृत एवं कृतिकृत

निराला के उपम्यासों का मुख्यांकन करने से पूर्व उनके व्यक्तिकृत एवं
कृतिकृत का अध्ययन करना अत्यधिक है क्योंकि किसी भी लेखक के रचना—संबार
में उसके पूरे व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति अनिवार्य होती ही है। निराला के
साहित्य में भी उनके जीवन की अभिव्यक्ति स्पष्टतः हुई है।

विश्वकृति निराला के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं और महत्वपूर्ण
संदर्भों पर विचार प्रत्य प्रकाश दालने से पूर्व उनकी जीवन—रेखा का सामंतिक लघु
रंगिण विवरण महत्वपूर्ण है:

1.1. जीवन

1. जन्मतिथि: बांसवंशी सन 1886
2. स्थान: महिशास्त्री और बंगाल
3. नाम: पूर्ण कुमार
4. जाति: अग्रसुधार
5. नया नाम: सूर्यकांत त्रिपाठी
6. निराला: नया नाम 1923
7. पिलास: पंज राम वहार त्रिपाठी
8. मातृ विषय: 1938
9. यान्यायवीत:
   - संस्कार: सन 1904 स्थान: गढ़ाकोट में समय
10. सन 1929 में गढ़ाकोट पून: वारसी
11. सन 1935 पुत्री का घरीरारूनत
12. सन 1943 मलेरिया खुशरे से इलाहाबाद में पीड़ित और वहीं पर बस गए।

सन 1955, 1959, 1960 में लगातार अस्तवस्थ रहे।
सन 1961, 15 अक्टूबर को महाप्रयाण।
1.2 शिक्षा

सन 1901 प्रारंभिक शिक्षा घर पर तत्परता से बंगाल पाठशाला में सन 1907 में महिलाध्वन के हाइस्कूल में जानार्थ प्रवेश सन 1913 में पत्नी की प्रेमणा के हिंदी का ज्ञान प्राप्त करना आरम्भ किया। सन 1914 में मैक्सवेल की पुनः श्री रामकुमार का जन्म हुआ, उसी वर्ष परीक्षा में जूनीयर हुए अतः शिक्षा प्राप्त करने का वित अंत हो गया। सन 1910 से 1918 तक विषयवर्ती संगीत शिक्षा का अध्यापन।

1.3 विवाह

1. पत्नी मायादति मनोहरा देवी के साथ सन 1908 में सम्पन्न हुआ।
2. सन 1914 में पुनः श्री रामकुमार का जन्म।
3. सन 1917 में कन्या सरोज का जन्म।
4. पत्नी मायादति मनोहरा देवी का शरीरान्वयन 1918।
5. पुत्री सरोज की बाली सन 1929 में।
6. सन 1935 में पुत्री सरोज की मृत्यु।

1.4 उपक्रम सकियत

1. सन 1913 में पत्नी से प्रेरणा गायक जिन्होंने ज्ञान का अध्यापन।
2. सन 1918 - विषयवर्ती संगीत शिक्षा का अध्यापन।
3. स्वामी फ्रेमान्नद ने में अध्यापन के प्रति रूचि जागृत।
4. सन 1915 में महिलाध्वन राजस्थान में नौकरी सन 1921 में वो महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रथम साहित्यकार। उन्होंने प्रेमणा से साहित्य - वेदा में धूमधामी बीन। नौकरी से स्वागत तथा बेकारी की चीड़ के प्रति हो पूनस्तुत नौकरी का विवेक करना तथा सन 1922 में नौकरी से स्वागत देना।
5. सन 1923 मध्यमा के सम्पादकीय विभाग में प्रवेश राष्ट्रीय कार्यों में रूचि तथा रविवारनाथ से प्रभावित।
6. सन 1924 हिंदी साहित्य सम्पादन दिल्ली में सामिल उल्लेख प्रभावित होकर राष्ट्रीय भावना का विकास।
7. वि० १९२५ में मत्तावता का संघर्ष विच्छेद। कक्षता में संघर्षपूर्ण जीवन। चार आने पुर्ण पर कंता के हिन्दी नवकाव। लवाहारों के विकास ने पीयर का एवं विवाह आदि के लिए पत्ता रचना कर पारिवारिक लेकर जीवन। यथाय।

8. वि० १९२६ में मत्तावता परिवार में दुःख सम्मिलित। गांधी जी के पशु में रस्ती-प्रवर्तन के परिचय वेश का विवोध।

9. वि० १९२७ में काशी यात्रा में प्रसाद जी के प्रेम।

10. वि० १९२८ में श्री मथुराबाबा से छतरपुर में साक्षात्कार। तीन सप्ताह बाद वापसी तथा गढ़गोला में बसे।

11. वि० १९३१ में साहित्य सम्मेलन के कक्षता अभियोजन में सम्मिलित हुए।

12. वि० १९३६ में लखनऊ में गांधी जी के हिन्दी के संघर्ष में बातचीत। हलाहाल में प्रमुखता लेखक संघ के अभियोजन में सामिल होकर प्रभावित। काशी में एकांतवास किया।

13. वि० १९३७ में कक्षता में सम्मान समारोह आयोजित। कैलाबाबा में प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में राजनीतिक नेताओं के प्रशंसा, बाद-विवाह आदि।

14. स्वरेवर साहित्य-सम्मेलन वि० १९४१ का प्रभाव।

1.5 सर्वनाम

1. वि० १९२० में प्रथम काव्य रचना प्रारम्भ। साहित्यक जीवन का प्रारम्भ। पं. महाबीर प्रसाद द्विवेदी से पत्र-रचनाहार। नया नाम सुर्यकांत जिंपादि। जन वि० १९२० में "प्रभा" में प्रथम काव्य रचना तथा दिसम्बर १९२० में "सरस्वती" में प्रथम गद्य-लेख।
बंग भाषा का उद्घाटन प्रकाशित।

2. सन् 1922 में रामकृष्ण मिशन केन्द्र "समन्वय" में भारत में श्री राम
कृष्ण उत्तराय लेखक प्रकाशित। कलकत्ता जाना और "समन्वय" के
संपादकीय विभाग में सम्मिलित होना। वर्ष 1922 "रामकृष्ण वचनामृत"
का हिन्दी अनुवाद करना।

3. सन् 1923 में "अधिवास", "पंचवटी प्रसंग", "शृंग की व्ली" की रचना,
"अनामिका" संग्रह का कलकत्ता से प्रकाश। निराला नाम से
मलबारा में प्रथम रचना प्रकाशित। "समन्वय" छोड़कर "मलबारा"
के संपादकीय विभाग में प्रवेश।

4. सन् 1928 में "मलबारा" से पुनः विषोद, वर्ष की लंबी से आकर 25 शीर्ष
पर पुस्तक भंडार, तेहेरिया दराय के लिए "रव अलेक्जार" लिखा।
पापुआ ट्रेनिंग कंपनी के लिए बाह्य विश्वविद्यालय और प्रकाशक निवास
चन्द चुम्मा के लिए चार बाल वीभत्त पर रवीन्द्र काशियर पर आतीयता
पुस्तक लिखी तथा इसी वर्ष "पंत और पत्तव" की रचना की।

5. सन् 1928 में गध कृतियों का संग्रह।

6. सन् 1929 में पुनः कलकत्ता। स्वयं प्रकाश नाटक, प्रकाश आर्थ
विख्या, परिमाल का प्रकाश।

7. लहौल ने प्रकाशित "सुधा" के संपादकीय विभाग में सामिल।
"अवसर" उप-पत्र का प्रकाशन सन् 1930।

8. कलकत्ता से प्रकाशित पत्र "रंगीला" का सम्पादन। तीन अंकों के
बाद हर तलाप वापिस। पुनः "सुधा" से छुटे सन् 1932।

9. सन् 1934 "अलका" "खिली" "संयम पदम" प्रकाशित। मुख्तियार की
रचना।
10. सन् 1935 में गीतिका, उखडीदाब व सबी का प्रकाशन।
11. सन् 1936 में "निर्धम" व "प्रभावती" का प्रकाशन।
12. सन् 1937 में "कुलचंद" की रचना की।
13. "कुरुसुल्टव" की रचना , "प्रवचन प्रियता" का प्रकाशन।
14. सन् 1938 में "बिल्लेश बहिर्वि" की रचना , "बुलद की बीबी" प्रकाशित।
15. सन् 1943 में बेकर चन्द्र के उप-पासों का अनुवाद। "अथि" प्रकाशित।
16. सन् 1944 में "चोटी की पकड़" की रचना।
17. सन् 1946 में "अपना", "बेला", "नए परस्ते" का प्रकाशन।
18. सन् 1948 "देवी" का प्रकाशन।
19. सन् 1949 "चांबुक" का प्रकाशन।
20. सन् 1950 "अच्छा" का प्रकाशन।
21. सन् 1954 में "आरामना" का प्रकाशन। "मीठ पुंज" प्रकाशित।
22. सन् 1957 "चरण" का प्रकाशन।
23. सांस्कृतिक काव्य, कथा प्रकाशन - 1969।
24. 3 संकीर्तित कविताएं - राजकम्ब्र प्रकाशन।

1.6 सम्मान:

1. सन् 1937 में कलक्ति में सम्मान समारोह।
2. सन् 1939 साहित्य समिति में काव्य सम्बोधन में साहित्य परिषद के अध्यक्ष, बांदा एवं मेहम में सम्मान समारोह।
3. सन् 1942 : छोरा एवं कुशकुशुर में सम्मान।
4. सन् 1947 : काली में निरान्तर स्वर्ण पर्यंती का आयोजन।
5. सन् 1953 : केंद्र सरकार को उत्तर प्रदेश सरकार का पुरस्कार भिड़ा। राजकीय आर्थिक सहायता भी।

6. सन् 1954 : "आरा" पर ₹ 2,100.00 का पुरस्कार।

निराला की जीवन यात्रा का बैरात देने के उपरांत उनके जीवन और व्यविधालय का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है।

निराला का जन्म अवध के एक गांव गड़कोला में हुआ था। आपके पिता राम प्रामाय के योजना निराला थी। अपने पिता की दितिया पत्नी की कुक्की के मंगल याद माथ श्राह एकादश संवत् 1955 विवो सबसे 22 फरवरी सन् 1890 को उत्पन्न हुए। जन्म विधि के संबंध में श्रेयों प्रस्तुत थे। ब्राल वंडमी के पिन महाप्रानाथ निराला का जन्म हुआ था। पिं राम सहाय के त्रिपाठी बंगाल में मेडिनीपुर जिले के महिवादल नामक प्रादेश में 100 विशालियों के उमे ब्यासार थे।

महाप्राज्ञ निराला की माता चाओदपुर निराला स्माथु प्रादेश के दुर्ग के परिवार के दी थी। निराला के जन्म के द्वारा वर्ष पर्यावरण उनकी माता स्वयं निराला गई। निराला के जन्म का नाम दुर्ग बलमार था। वंदना ने जन्म संबंधी बनाई। कहा: लड़का मृत्यु है, दो व्याय लिये हैं, है भाग्यवान, बड़ा नाम क्षमाग, इतना नाम रघु मृत्यु बलमार। राम सहाय के सोचा दो व्याय हुए हैं, गेटा भी हुई की रीति नियाम्य थी।

/1/ विश्व सैन्य निराला : डॉ उदास नीहार, पृष्ठ 7 [प्रथम भाग]
/2/ निराला सार्विक साहित्य संग्रह : डॉ राम विशाल वर्मा पृ. 14
निराला की माता का देखना उनकी बाल्यावस्था में हो गया था। पिता की देखरेख में ही उनका राजन - पोषण हुआ और महिषाद्व अपने जीवन के भी दो भाग है: प्रथम पिता की मृत्यु से पहले का जीवन और दूसरा वह जीवन जब निराला ने महिषाद्व में स्वयं नौकरी की थी। महिषाद्व के प्रथम जीवन का मृत्यु दिवस यह है कि निराला बंगाल स्कूल में, तत्परता साधन स्कूल में पढ़ाई रहे और बैकवाड़े में आए बुरे लोगों से बैकवाड़े सीखते रहे। कुली कृष्ण रामायण का गायन भी उन दिनों विशेष था, मनों की बात यह थी कि निराला ने संगीत के साथ - साथ पुष्पक और कुली आदि भी सीखी थी।

1/1/ पंटो राम वाहानी कुटी प्रकृति का व्यक्ति है, उनका दिपिका कैलाश व्यक्ति था। गब्बर होने पर निराला को कठिन मारा का दिखाया होना बहुत था। देखिये किसूं भक्ति होने पर निराला को मारा सबसे फर्क थी। यह प्रसिद्ध उपन्यास "कुली भाट" के यह निश्चित प्रभावित हो जाता है कि निराला जब बुवावस्था के उस समय भी वे विज्ञा की मार बदल करते हुए भी पिटते रहते थे।

इस प्रकार निराला में बंगाल और बैकवाड़े व्यक्तित्व का एकाध परिपाक मिलता है। बैकवाड़ा, अवबंधत, साहस, बुड़त और दुर्वार्थ के लिए प्रसिद्ध है। छठ - बुढ़ पर बैकवाड़ी व्यक्ति बोखा उठता है, किसूं स्नेह मिलने पर अपने प्राप्त की बाबा भी लगा देता है। निराला में मृत्यु पर्यन्त उक्त सभी गुण शुरू होते थे। "शिलाधर का पत्र", "एक बार बस और नाच जब इस्मा" "बादल राग", "राम की विज्ञाप्ति", "आगो घर एक बार" आदि रचनाओं बैकवाड़े रचत और रचन का ही युवावस्था परिवर्तन है। दूसरी ओर निराला

1/1/ निराला: व्यक्तित्व और कृतित्व - द्वारा नारायण टलंडन दूरो 28
की प्रेम और सोन्दर्य से संबंधित रचनाओं में "बंगला भागुकता" , रवीन्द्रनाथ रहस्यवाद अथवा विवेकानन्दीय भ्रमणिक व्यवहारिक अहंकार की जलक मिलती है। यह विभाजन बहुत ही स्पष्ट लगता है, किन्तु समझता है, उपयुक्त है। कारण इसके संकुच मानसिक स्थिति का पल है। अत: यह स्पष्ट है कि किसी रचना में अवधीय अथवा बंगाली स्वभाव को सर्वथा अलग - अलग करके देखना असंभवताएँ होगा।

निराला ने "हुली भाट" में स्वयं अपने अवधीय स्वभाव का वर्णन किया है: "मैं बचपन से ही आजादी पसंद था। दबाव नहीं था। जीवन में लड़की लड़के के लिए विद्रोह का एक स्वयं स्पष्ट होता है। निराला ने उदाहरण भी दिया है किसे उनके जिथें का एक स्वयं स्पष्ट होता है।

निराला को कमी - कमी उनके जिथों बंगाल दे "गढ़कोट" ले जाया करते थे। जब वह आठ वर्ष के थे, तब निराला को यजोपवीत के लिए गढ़कोट ले जाया गया। गढ़कोट के तालाबकरार मिश्र भगवान दीन हुबे ने एक वेश्या बैठा थी। उससे उन्हें तीन लड़के और एक लड़की दुई। लड़कों में एक का जोड़ कही किया गया, सिस से परिवार के दबाव के कुलीन जीवन भी शामिल हुए, किन्तु दुकान बी की मूलु के बाद गांव वालों ने वेश्या के पुत्रों का दुकान पारी बंद कर दिया। प्रतिबंधकार वेश्या दुकान कुलीनों के घरों को पोल लोटा रखते थे। निराला की जरूरत होने पर पक्षा वेश्या दुकान के घर की - की जा लिया करते थे। किन्तु जरूरत होने पर भी उन्होंने वेश्या पुत्रों के यहां खाना - पीना बंद नहीं किया क्योंकि वेश्या पुत्रों ने निराला को उल्लसन्द दिया था - "अभी इसे हमारे यहां का खाते हो, लेकिन ही बांटेगा, न खाओगे।" ।// मांण्ड-वालों ने// निराला। विश्वस्त्र और कुटिल सम्बन्ध, ग्राम नारायण टेस्टिंग वू026-27
गांव वालों ने निराला के लिए सिकायत की। पिताजी आग बदला हो गए।

एक तो सिपाही आया, फिर हुसैं - पुस्त। इस पर व्यक्तिगत और सांप्रदायिक आगमन, पाते ही गूढ़े पकड़कर कौजी ग्रहार जारी कर दिया। मारते समय पिताजी

इस तनाव हो जाते थे कि वो भूल जाते थे कि दो विवाह के बाद पार हुए इस आते गुन को मार रहे हैं। में ही स्वभाव न बदल पाने के कारण मार खाने का बादी हो गया था। चार- पारंपरिक साल की उम्म से अब तक एक ही ग्रहार का ग्रहार पता - पाते सहनीय भी हो गया था, और ग्रहार की तब भी मात्राम

हो गई थी।

इस थी पिताजी की भीपरवाह न करते हुए निराला ने केवल गृह के हाव का खरा - पीना बंद नहीं किया। तिनुँ हुबारा निराला की सिकायत होने पर कुत्ते निरालों ने पिताजी को सामाजिक बीमारकार की नमकी दी। इस

अवसर पर पिताजी के स्वभाव पर निराला ने स्वभाव ग्रहार का कहा: "ओज की मात्रा पिताजी में उस 'कुत्ते' निरालों से अफक थी। पिर गुरुचारों ने वे बातें डांट के साथ कहीं पीछे व्यक्तिगत वात को व्यक्तिगत रूप देते हुए पिताजी ने कहा,

"दु समारा पानी बंद करेगा। दु पापी कहे, गांव में जा पूंछ, तेजी लड़की पटने में एक दो तीन चार कर रही है - हम अपनी अलंको देख आए हैं। शहर में होते जो देखें हम किन्हे अभिमानें को बीज का पानी और ढाक्टर की दवा छुड़ते हैं। मुखिया का भूक पूछ गया।"

ऐसे धाक्का निरालों के दूर नए निराला जी। पिता को जुन के अंत और पिता पर गर्म भी कम नहीं था। विद्रोह वर्ष में निराला का विवाह मनोहरा देवी से कर दिया गया। "कुत्ते भात" में निराला ने अपने मुहरम जीवन प्रशंसक का उल्लेख किया है। दो वर्ष बाद सोलहवीं साल में निराला का गोपा हुआ। मनोहरा देवी तीसरे वर्ष की थी। गांव की दृष्टि से "दामाद
जवान, बिठिया जवान। " किंतु अनुराधित लंकत निराला के साथ बच्चन से छुड़ गया था। गोपा होते ही गांव में प्लेन पैदल बागा। इस महामारी के कारण गांव के बाहर पंस के निर्मित घोपड़ी में निराला जी को अपनी भूमागरात मनानी पड़ी, किसका विश्वदृष्टि सुंदर और रोचक वितरण निराला ने उन्हें "हुल्ली भाट" नामक पुस्तक में दिया है। प्लेन महामारी के दर तथा आतंक के कारण मनोहर के पांचवें दिन अपने मामले चली गई। किंतु निराला जी को सहुराल बुलाया गया। निराला के सहुराल जाते समय पिताजी बोले - "सहुराल जाव। लेकिन यहां के लिया गरी रहे। नहीं हृदय ही जारी। अतः निराला ने पिता की मार ही नहीं छाई, अपितु पिता का वातान्त्र, सेह और बनका पुंज विषठक गर्व भी पाया था। वस्तुतः जब तक निराला के पिताजी कीविरल रहे, तब तक निराला को कठोरता नहीं हुआ। निराला ने सहुराल पात्रा का बहुत ही मनोहारी तथा रोचक कहन किया है।

"बाहर चाई पार करते ही ऐसा लोगों आया कि एक साथ उड़ीली भैसे जग गई हो, फिर भी घर पीछे नहीं गई। बंगाल की वीरता और प्रमानकित बेकर कर रही थी। "घड़ी - गहड़ा" के छठे का नित गुड़ा लेकिन स्वरोधकम्यून था, पड़ा बी बाझरी तक पहुँचते - पहुँचते हुई गई। देह गर्व वर्ष हो गई। मुंह में क्रीम लगाई थी, पाण पर भैसे आयोफार्म पड़ा... क्राई के पैर आये बुझाया, ठकाका भूल ने जंकड़ के भोके से ठोकर बी और मुंह बोल दिया। "

वस्तुत: यह सहुराल पात्रा ही निराला के जीवन में मण्डल अध्याय था। उसके बाद की कथा अस्पन्त कहना है।

साहिसद में तो प्रारंभ से ही वे विश्वासक तत्व बनकर आए।
"भलमऊ" स्टेशन के पास "शेशवंशपुर" नामक गांव में निराला की सुशरार थी। उद्ध का इतिहास सम्प्रदायी राजा जपचंद के राज्य में ही शामिल राज्य शामिल था। जपचंद के समय के भलमऊ का वर्णन निराला जी उन्हें अपने युवान उपन्यास "प्रभावली" में किया है। इसी उपन्यास के कारण भलमऊ प्रसिद्ध और अमर हो गया। "कुली भाट" में भी जपचंद के समय के पंडितों का निराला की भी उल्लेख किया है। "यद्यपादे प्रति" कविता निराला जी ने इसलिए लिखी थी कि उनके अनुष्ठान के गौरव को सम्पूर्ण बोधन के साथ प्रमुख थे। जल्द गये "प्रभावली" और यह है "यद्यपादे प्रति" एक ही मानसिक रिति की दो अभिरंजनार्थ हैं। जिसे आजकल आंदोलित क्षेत्र में प्रदर्शित किया जाता है, उनके लिए निराला के उपन्यास को ध्यान से पढ़ना ही पर्याप्त है। किन्तु हिन्दी में लोग के "इंस्पेक्टरों और कोच्चियों" का यह हाल है कि एक सज्जन ने जैसे जब एक
जिननविधालय को “अंतरिक उपन्यास” पर स्वयं माँ तो उनसे कह दिया गया कि हिंदी में जब्त अंतरिक उपन्यास इस्तेमाल नहीं कि उन पर शेष ग्रंथ लिखा जा सके। मानी निराला, प्रेमकिंद और प्रसाद के उपन्यासों में अंतरिक्ता मिलती ही नहीं। ऐसे पिताओं की दृष्टि में अंतरिक उपन्यास लेकर केवल स्वयं का बाद ही उत्तम हुए हैं।

निराला ने यकीन “कुल्ली भाट” में मसाले मूल में सबुराल - प्रसंग लिखा था, हालांकि फिर भी वह उसे मस्तिष्क जैसे जीवन में “नविन्ततान” सा लगता है,” में हर्षित हो आंख बंदकर आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। सबका भोजनपन बमापत हो जाने पर मंद गति से संबंध के बमापत के बमापत को प्रणाली लकर हुई उनकी प्रतीक्षा आई।”

“चिंताक दूरकर्ता ने दरी मिलाई। रह की लसी ते जाया। में पत्ता लेत गया और छाया मिलाकर कहा, यहां लगाओ - सलर जी भुंंघु - भुंघु वाहं निकल आसूर अर्धे दिनिमालखे हुए बोते - अर्धिनिन्धद रही है बज्जा द्वतन अत खुल्ल न लगाया करो, हुए पकड़ती हैं।”

प्राय: निराला के जीवन प्रसंगों में मनोहरा देवी द्वारा निराला जी को हिंदी पढ़ने के प्रसंग की चर्चा हुई है। किंतु केवल कार्य कृतियाँ पढ़ने और उनके गम की दृष्टि से परिचय के कारण यह अनुमा दिया गया है कि "कुल्ली भाट" और "राम की शक्तिमया" में अनुरागक्ति रचना और सीता द्वारा कुल्ली भाट और राम प्रेमिका राते हैं। उसका भाषार है, "कुल्ली भाट" में यकीन निराला का मनोहरा देवी के मिलन। हरिजौप द्वारा प्रसंग में विप्रलाम भंगार, कुश्च रस में परिप्रेक्षित होता हुआ दिखता है। क्या कारण है कि निराला के विप्रलाम चैर संबंधित
रचनाओं में उंगर कल्प में परिवर्तित होकर अपना महत्व नहीं छोड़ता है। कारण यह है कि निराला के अपने जीवन के अनमोल क्षणों में मनोहरा देवी का सहवास छुप भी आया था और मनोहरा देवी उस अल्प कालिक सहवास के समाप्त हो जाने पर कवि ने मनोहरा देवी के शागर और सुह को अलौकिक और रहस्यवादी रूप में आदर्शित कर दिया। रचना और शीतला की प्रेम वृत्तियों के मूल के मूल में मनोहरा देवी की निम्नलिखित चर्चा है -

"श्रीमती की पिता के ख़ुदी तरह जानती थी यह बिना कान्ता के एक रात पर नहीं हो सकती और आधुनिक प्रेमियों की तरह पिता बच्चे न्यास से यह मुझे देश आते हैं, यह दूसरा विश्वास हरिगित न करेगा। यानी मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता। बात यही थी। दिन भर दिशाग रहता। रात में श्रीमती जी को देखने के साथ अनुराग में परिप्रेक्ष्यत हो जाता था। ...श्रीमती की पूरी अध्यात्म में नहीं आ रहीं थी वह समस्त प्रेम विवेक के से और चाहे कुछ भी होता, हिन्दी का पुरा गंगार हुँ।... छुए। श्रीमती जी की पिता की पूरी बात नहीं है। एक दिन बात बढ़ गई। बैठे कहा- "लुम हिन्दी - हिन्दी करती हो, हिन्दी में बोलता क्या है।" उन्होंने कहा- "बब समें आती ही अनसंग तब कुछ नहीं है।... लुम खड़ी बोली की क्या जानते हो।... श्रीमती की पूरे उत्सव में खड़ी बोली के पुराने नाम के नाम गिनती गई।"

हिन्दी साहित्य के लिए यह चटना स्वाभिमान महत्वपूर्ण थी। निराला की इसके बाद खड़ी बोली के कवि बने। निराला की चौथी जीवन वर्ष पूर्व होने पर अपनी बुराल गर दे और यही समय था जब तरसती अपने पूर्ण वेध पर थी, जब 1912-13 में निराला की जी को यह उपदेश पत्ती द्वारा मिला। सन् 1913 में रवीन्द्र को नोबेल अर्पकार मिला था और प्रसाद जी की बनी इंग्लैंड की रचनाएं "इन्द्र" में निकल रही थीं। निराला ने अपने साहित्य में प्रसाद के "इन्द्र" की चर्चा
कहीं भी नहीं की। उत्त: निराला जी ने स्वतंत्रता आपना मार्ग प्रस्तुत किया।
"कुल्लो मांग" के अनुसार निराला ने हिंदी व्याकरण अथवा तरह ही न्यायन सम्प्रभु "शुभी की कली" सिद्धौ जो सन् 1916 में "सरस्वती" से अब्बीकुल होकर सम्पन्न "माधुरी" के प्रथम वर्ष के अंत में अपनी प्रसंन का परिष्ठल "युगल की भूमिका"। इन्होंने बाद "मलाला" प्रकाशित हुआ था और उसमें निराला की रचनाएँ निकलने

गनोहरा देवी की मुत्तू उल्लत घटना के छह वर्ष बाद हो गई, जब निराला की आयु 22 वर्ष थी अर्थात् सन् 1918 के लगभग। "शुभी की कली" में घोषन की जो उल्लत दिखाई पड़ती है, वह बाद की रचनाओं में क्यों नहीं मिलती है बाद में दिखाई देती है, विद्युत की राह है, रहस्यमयी है, किन्तु "शुभी की कली" में नायक निपट निशुरा और पद "कलेन आतिहित" का वर्तमान है, वह आगे बढ़ने नहीं मिलता। इसका अर्थ है कि "शुभी की कली" और "लुम और श्रृ" आधि के बाद निराला की पुकार से सूक्ष्मता होने गए यद्यपि प्रेम का लोकिक आयार गनोहरा देवी का स्वर्णवास हो चुका था। गनोहरा देवी घराहर के बाद रूप में एक पुत्र और एक पुत्री दे गई थी और आत्म को जीवन भर के लिए कर संसार से अवशेष लाए। किन्तु इसके बाद ही निराला का स्वर्णवास बिन्दू था। यह कहनी अल्पुत्त कल्प है किन्तु इसके निराला के "ब्रतीदिप कोलोरापिद" मुद्रित कुबूलादिप" के स्मारकों और साहित्य पर भी प्रकाश पड़ता है।

यह अस्पष्ट था कि निराला जी कथी उम में अनेक अस्पष्ट मुद्रियों को देखकर विद्यार् खा यात्रा नहीं हुए और जब वह यह उपयोग कर चुके तब प्रायः हो गए, यह विचित्र हो था। राम की एक कथा उस वर्तमान
में है - "सोलह - सत्रह साल की उम्र में भारत में जो विष्फूल हुआ वह आज तक है। लेकिन मुझे इसना ही हर्ष है कि जीवन केवल समय से मैं जीवन के पीछे दौड़ा, जीव के पीछे नहीं। इसलिए आप वह बात जानूंगा। जीव के पीछे पड़ने वाला बड़े -बड़े मकान, राष्ट्र, चमत्कार और वाद से प्रभावित होकर जीवन से धार गोला है, जीवन के पीछे चलने वाला जीवन के रहस्य से अभिभावक नहीं होता।"

इस वक्तही से मैं यह अनुमान करता हूं कि पिला, भाई, भावन,
भली आदि की मृत्युपरात निराला की निराला नहीं हुए, जैसे धारण करते हुए जीवन से छूटने रहे। क्योंकि वे साहित्य के द्वारा उस विशिष्टता को प्राप्त करना चाहते थे, जिसे समाज से लेख भी होती रहे और बदले में कवि को समाज और सेवा भी मिलता है। इस जीवन के निराला भी वीरित रहे। उनके पास फिर भी ग्रामीण आधार पूरा और पुरात्ती थे। किंतु जब उस विशिष्टता को निराला की ने प्राप्त कर देखा कि समाज लेख का सेवा ही बड़ा है, इस रक्षावर्धन करके वह गई सेवा के बदले में उपेया, भर्ती अयमान और मोक्ष मिलता है तो कवि बुद्धि विद्वान इस दृष्टी के आधार को सहन नहीं करता। वह प्रकृति के कोयल को सह गया किंतु समाज की बड़ता को नहीं चढ़ सका। आर्थिक विषयों और भारी हावभावों पर आधारित समाज ने निराला की संदेश पर इसना जितने भार ढाला कि कवि अपना मानसिक बहुत बड़ता जो बैठा। स्वयं भग होने पर मुनर्या या तो आत्मसक्त बन लेता है या पागल हो जाता है, अपना अवसरवादी बन जाता है। निराला जिन असिध्यों के बने रहे, वे पूर-पूर हो सकती थीं। किंतु तेज ही सकती थीं। जब कवि विषयक और बांधकाम समाज के अनुभव में अपनी लक्ष्य से सौंपिक परिवर्तन न देखकर अपनी उन्माध्य अवस्था में ही रहने लगा, जहां न बंधन है, न विषयता है, न अयमान और न राग-द्वेष। किस अवस्था को औऱ्किं जस्ता देख न पा सका उसे वह अपनी
उन्माधुस्त्त कल्पना के बज़े से भोगने लगे। यही निराला का बार-बार भाषण था, किन्तु इस अवस्था में पहुँचने से पहले की कहानी राखी है।

मनोहरा देवी के उपदेश के बाद पाँच वर्षों की अवधि में निराला कवि से और इस बीच कई बार सबरात आना-जाना भी हुआ।

बर्बरप्रथम निराला जी ने पिताजी को कहा। निराला ने मिला-भोग देवी के बीस वर्षों के लिए तीन बार भाषण दिया जब वह ब्रह्मी बदले को थीं। ब्रह्मी का प्यार उस समय बहुत दिया जब वह ब्रह्मी घटी थी। सबरात पहुँचने पर पता चला कि पत्नी स्वर्ग चिंताओं दुखी हैं। इस इंसान-जाति ने दादाजी माने के श्रीराम के भाई के भी प्राप्त विषय। यह पहुँचते-पहुँचते भाई की ताज़ा देखने को मिली। रास्ते में चककर आ गया, तिसर पकड़कर बैठ गया। भाभी बीमार झटके। उनके चार लड़के और एक दूध पीने लड़की थी। उनका बड़ा लड़का निराला के साथ बंगाल में रहता था। उन में कच्चा शरीर था। भाई के बाद चाचा बीमार पड़े भाभी हुई गई। उनकी दूध पीने लड़की बच्ची थी। चाचा ने भी दम लौट दिया। इस अंतर्यावर्त दूध विश्वास दंडना के घर के कई समय मूँगु दिया। निराला के पिता के मर्म में चाचा दादा के अन्तिम के दो अपने बच्चों को भार था। दादा के कोई बच्चे की उम्र 15 वर्ष थी और निराला की लड़की सरोज की उम्र वर्ष। चारों और अधिनार नजर आता था।

इस प्रकार मे नौकरी ही रंगात्रि सहारा थी किंतु निराला के मन में अब सम्मान की भावना आवश्यकता से अधिक थी और यही उनकी विश्वासता का अर्थत। इस वृद्ध के अनुसूचित का अर्थ भी थी। निराला उपरिवर्त्तकों के विचक्षण थे। वह न केवल नाना श्रीराम की मूर्खता और धर्म के उच्च भाव के विश्व लड़ते थे अर्थपुष्प वह राजा साहब के यहां एक साप्त के अंगितिकाकों के विश्व
भी लड़े। अपनी शीर्ष नीलाम करके और नौकरी छोड़कर भलीबे के साथ गांव लौट आए। किसी कठिन परिस्थिति थी और उधर साहित्य के केंद्र की दशा का भी निराला ने वर्णन किया -

"मैं बेकार था। "सरस्वती" से कविता और देख वापस वा जाते थे। राक्षसी छोटी थी। "प्रभा" में मातृभूमि हुआ कि बड़े-बड़े आदमियों के बुखार लेकर और कविताएं छपती हैं। एक दफा आर्य साधक बातचीत की, उसके पश्चात जिसके भारतीय आत्मा, राजनीति, परिवार, मैथिली भाषा जैसे कवियों की कविताएं छपती हैं। "नूह कटकार लौट आया।"

किंतु निराला हल्ला नहीं हुए। कुछ समय बाद निराला की धाक जम गई -" कुछ ही दिनों में कविता - केंद्र में जैसे बुझे लग जाएं। इस समय कवि किसानों और जनता धर्मदर्शियों में धेरा नाम लेख। दुराने स्कूल वालों ने मानसबंधी की और लड़कों छड़ गई। पर हार पर हार खाते गए।" 

निराला की प्रवर्तन का कारण था, नूतन मुक्त छंद और नूतन सोन्दर्य बोध। निराला के पूर्व प्रसाद की, मेधिशिरस गुप्ता, सिवाराम सरस्वती और राजनीतिक वाणिज्य ज्ञान वान का प्रयोग कर चुके थे, किंतु छंद को केवल प्रवास पर आधारित करके, उसे सर्वथा निम्न गुण करना ही निराला का कार्य था। उनके हंगममुक्त "पटुने की कव्या" पर आधारित थे, गण वर्ष भाषाओं पर नहीं। इनके सिवा वह मोहक चित्रों और मनोहर भावों की वुफिट कर उन्हें व्यापक सार्वजनिक और अन्य भाषाओं में लीन कर देते थे, किंतु दीव्रेडी गुप्त की स्पष्ट उपदेशावादी या सहज आर्यवादी प्रवृत्ति के विश्वास इस नूतन सोन्दर्य बोध ने सहप ही सिविल समाज का ध्यान आकर्षित कर दिया। किंतु प्रश्न भी भीमा का भी साथ चल रहा था।
जल: पंजीरी व्रतशाला द्विवेदी की सिफारिश पाकर निराला जी विशेषाधिकरण मिशन के पत्र "समन्वय" के सम्पादक मण्डल में कार्य करने लगे। कुछ समय बाद उन्हें तेज़ महादेव प्रसाद के "मलबाला" में कार्य करना पड़ा। सबसे तेज़ जी निराला को बुलाते स्थान देते थे, "मलबाला" से निराला का बुला ही अधिक प्रचार हुआ।

निराला जी ने इस अवसर में विशेषाधिकरण मिशन के सम्पर्क के कारण अदेशवाद पर प्रौढ़ लेख बनाए लिए और विशेषाधिकरण की ही तरह अदेशवाद के द्वारा देश को स्वतंत्रता की प्रेरणा दी। निराला अदेशवाद के आनुरक्षण रहकर भी "मिशन" के अनुयायियों के चमत्कारों का बराबर विरोध करते रहे। उन्होंने एक कहानी में एक बाबा द्वारा अपने उद्योग सम्मोहन का भी वर्णन किया है। पर निराला जी कच निकले।

"मलबाला" और निराला का बंधन भी आगे न कह सका। वह विश्वास, संघ, अशुभ आदि के अन्दर अपना कार्य चलाते रहे। आचार्य का विषय यह है कि इस आधिकारिक नियन्त्रण में भी कवि अपने साहित्यिक स्तर की रक्षा केवल करता रहा फिर भी कल्यंत्र के हत्या पड़ा और सन 1928 में निराला जी की आख़िर में रह ने लगे। जब 1929 में उनका "परिमल" प्रकाशित हुआ। हृदय में लाल भारत की प्रेरणा से उनका प्रथम कहानी-संग्रह "बिली" और "अस्परो" उपन्यास भी गंगा पुस्तक माला से प्रकाशित हुए। यह "पत्लव-आंदो" काल था। इन दोनों रचनाओं के प्रारंभ और पंख को अधिक ख्याति दी थी। परिमल के बाद यह स्पष्ट हो गया कि निराला पंख और प्रसाद जी से भी प्रभावित थे उनकी बदल साधन ओड़ियाँ और सनंद है। यह अदेशवाद तेज़ उलटना नहीं है निकला सनंद सब्ज़ाकरी में निमित्त भार्तेश्वरियों को विचित्र करने का प्रयत्न है। उसके विस्तारित निराला जी "बाबूल राग" "जागो फिर एक बार", "भिकु" एवं रचनाओं में "पत्लव", "गुंजन" और "आंदो" काल की मात्रा रोजाना भावना के विस्तार राष्ट्रीय और धर्मार्थी रचनाएं थीं।
निराला के स्पष्ट और पृष्ठ में यह वैदिक और पौष्प नहीं था। इसके बावजूद सिवा निराला के ध्यानमत का आर्कश और भी अधिक था। पृष्ठ और प्रसाद उसने विवादास्य ध्यानित नहीं बने, बिल्कुल निराला की बन गए थे। इसलिए भी निराला के प्रति आर्कश अधिक था।

इसके बाद निराला जी की साहित्य समर्पण से टकर हुई और उन्हें पुराण प्रवृत्ति, प्रभावाय सूचने के वाङ्ग का सामना करना पड़ा। सनातनियों के वर्तमान धर्म और "साहित्यिक विनियोज" शीर्षक लम्बा विवाद क्षू। इसी साहित्यिक संग्राम में निराला जी अपने लांचराओं के खिलाफ हुए। सने "30 " वन "35 तक क्लक्स्ता के प्रथित पत्र "विशाल भारत" द्वारा निराला जी के पर की घट उठाती गई। इसी बीच निराला जी की विवाहिता पुत्री सरोज का स्वर्गवास हो गया खिले देखकर वे मनोहर हेड़ी की यमका को भूले रखते थे। हिन्दी का सर्वांश शोकित "सरोज स्मृति" है। निराला इसमें कला की चिन्ता न कर केवल कवि के रूप में है और भावनाएं अपना प्राप्त पर अपनाकर चली हैं।

"दुख ही जीवन की कथा रही
तत्त्व कि अज जो नहीं कही।
कृष्ण मत कराँ का अर्थ
करता देशा र्ण।"

1.7 निराला का क्लक्स्ता-पीवन और मलता काल

अस्तित्व तथा प्रभावों की दृष्टि से निराला का महिमागल का
श्रेणि का जीवन महत्वपूर्ण था विषु क्लक्स्ता निराला के साहित्य और योजन की
क्रीडा-भूमि रहा। इसलिए निराला को क्लक्स्ता के गहरी रामायण आत्मवाणी।

/1/ अनामिका, सरोज स्मृति, पृ 134
रही। निराला जी ने अपना उपनाम "श्रीलाल" भी मलवाला के अनुग्राह पर
यहाँ रखा था, जो कि मलवाला के प्रयोगक्रम प्रयत्नक पूरा ही प्रकाशित हुआ था। जब
उनका पूर्ण नाम फ्रौ फूर्नास निराला लिखा इसी के साथ उनकी एक कविता
भी प्रकाशित हुई। यह पत्र अगस्त 1923 में सेठ महादेव प्रसाद ने प्रकाशित किया
था।/2/ ऐसे पत्र के द्वारा निराला जी हिन्दी साहित्य में हुआ खूबसूरत हो गया।
निराला जी अभी महसूस के साथ सम्मानन्तर रहते थे अतः मलवाला काल निराला जी
के जीवन का "स्वर्णकाल" था। मलवाला की दिन भी चारों ओर निराला जी के
कारण ही जम गई। अतः मलवाला पत्र के समय प्रसाद में निराला जी अपना पूर्ण तथा
प्रारंभ भाषा में समय देकर उनकी यात्रा बढ़ाने में संलग्न रहते थे। वास्तविकता यह
यह है कि मलवाला मंडल के चार मदर में निराला जी प्रमुख थे और खुद अपने
सरीरौंचक प्रयासों से ही बना रहे थे। मलवाला में निराला की कविताओं का ही
सरीरौंचक वात्स्य था, अर्थात् सब्जी हो यह है कि केवल निराला जी पर ही मलवाला
चल रहा था।

निराला जी ने प्रारंभिक कुछ कविताएं रवीन्द्रनाथ टैगोर की
कविताओं के आधार पर लिखी हीं। उन कविताओं के प्रोत्साह के बारे में उन्होंने
अपने इन मित्रों से चर्चा की थी कि निराला की प्रतिभा के कारण हो सकते थे।
"भावों की भिक्षुका" नामक एक प्राचीनक लेख में इन कविताओं की मौलिकता के
रहस्य का उद्घोषण प्रभाव नामक पत्रिका ने किया।/2/
1.8 निराला एवं स्वामी रामकुस्तूर परस्महंस और श्री विशेषकान्द का प्रभाव

"साहित्य" के पुस्तकादेश के संदर्भ में निराला का श्री रामकुस्तूर

/1/विशेषकान्द निराला: काला (कुटुंबसूत्र, नीहार पु. 012

/2/भावों की भिक्षुका" नामक लेख लिखा था "प्रभाव" में श्री भैरव्यक्ति
शरण गुप्त ने। इस प्रकार निराला की साहित्यिक भावना पु. 010-05।
परमईं तथा स्वामी विवेकानंद की विचारधारा से आलम्बात हुआ। इसका निराला के जीवन, तपस्या तथा साहित्य पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। वहां निराला का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक वातावरण मिला। परिणामतः निराला जी “मां काली” या “जितनि” के उपासक बन गए। निराला को स्वामी विवेकानंद के विचारों में वेदान्तीय अखेलबाद का वर्णाश्रित रूप भी देखने को मिला।

निराला स्वयं भी विवेकानंद और आप में बड़ी समता देखते थे-बाह्य आकार में और विचारों में भी। प्रस्तुत संदर्भ में निराला जी का निश्चित वक्तव्य महत्वपूर्ण है। उनका कथन है-“जब मैं बोलता हूँ तो यह मत समझो निराला बोल रहा है। तब समझो, मेरे भीतर मे विवेकानंद बोल रहे हैं। यह तो हृदय जानते हो कि मैंने विवेकानंद का खारा वर्ण हजम कर लिया है। जब इस प्रकार की बात मेरे बंदर से स्नेही है, तो समझो, यह विवेकानंद बोल रहे हैं।” /1/ निराला ने यहां स्पष्ट एवं पूर्वस्थापित स्वामी विवेकानंद का अपने व्यक्तित्व पर प्रभाव स्वीकार की किया है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के साहित्य तथा कविताओं का अनुवाद भी किया है। /2/ इसके अतिरिक्त श्री रामकृष्ण परमहंस के साहित्य का भी निराला ने अनुवाद किया है। /3/

1.9 क़लक्ति के बाद विभिन्न स्थानों का प्रभाव तथा निपाह

क़लक्ति से लौटने के बाद निराला की दीर्घकाल तक लगभग रहे थे। अपने जीवन के अंतिम 10-12 वर्ष वे इलाहाबाद रहे। क़लक्ति, लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस, जम्मू, गढ़वाल, उन्नाव और कर्नल की जनता के लिए वे गोद का हार दे। क्योंकि इन स्थानों पर रहे। /4/ वैसे समस्त भारत और हिन्दी को निराला के निष्ठुर है।

/1/ निराला: अधिनियम ग्रंथ, अग्रेज व संस्कृत, पृ. 1014।
/2/ भारत में विवेकानंद आदि तथा कवितावली।
/3/ श्री रामकृष्ण वचनामृत माग-3 आदि।
/4/ विश्वकोष निराला: 4740 जबनेन नीहार पृ. 3।।
अयोध्या श्रद्धा हुई। वे अपने जीवन के अंतिम वर्षों में दाराबान के उस छोटे से कमरे में ही रहे और वहीं उस महामानन्य, महाकाव्य, महान् भक्त और महान् दार्शनिक की मृत्यु हुई। अपने जीवन काल में भी निराला बेहद लोकप्रिय थे। कलकत्ता और बनारस में दो बार उनका सार्वजनिक अभिनंदन भी हुआ था। जनता उन्हें अस्त्रघात स्मरण करती थी।

महाप्राण निराला की महान्यता इस प्रकार स्पष्ट है कि वे अक्षुण्ण आधारों को सहन करते हुए भी प्रगति नहीं ले हुए। चूंकि कृप्तों की सहकर भी उन्होंने हिन्दी साहित्य को इतनी महात्मा देनी दी। यह केंद्र है कि निराला जैसा साहित्य-स्तरकार प्रस्तुत भाषा और प्रस्तुत देश में उत्पत्न हो। यदि ऐसा संभव हो जाए तो प्रस्तुत राष्ट्र तथा भाषा का यह स्वर्ण गुण होगा तथा निराला जैसे विलक्षण प्रतिभा तथा शक्ति और सर्वशास्त्र सम्पन्न व्यक्ति के समुच्च विश्व का कल्याण होगा, इसमें किंचित मात्र भी संदेह नहीं होगा।

किसने पिता, पत्नी, भाई, भाभी की मृत्यु पर भी समय न तोया, उसका धर्म पुनी की मृत्यु पर न बख सका। कालिदास की सुंदरतम पंक्तियाँ शुद्धलाल की विवाद के समय पर कही गई हैं, इसी तरह निराला की मार्मिकतम पंक्तियाँ "सरोज की स्मृति" में कही गई हैं। भारतवर्ष की दो जेता रचनाओं में इस प्रकार एक जेता की विदा पर है तो दूसरी उसकी मृत्यु पर। "सरोज स्मृति" नामक कविता में निराला ने सरोज के लिए "कविता कविते", "गीते मेरी" /1/ और "मास्कर यह रत्नहार लौकिकतर" /2/ आदि संबोधनों का अभाव किया है। जिसके निराला का अपनी पुनर्जीवन के प्रति गहरा वातवन्य भाव प्रतिलिप्त होता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि सरोज की स्मृति निराला की सहनस्वरूप

/1/ उत्तराखंड पु. 118
/2/ - बाहर - पु. 117
की चरम सीमा थी। कवि ने "शृंगार" तथा "राम की शक्तिज्ञाना" के अपने संहिता की रचना की और "बृहस्पति की स्त्री" से प्रारंभ होने वाला काव्य इन कृतियों में आकर अपनी चरम विकास अवस्था में पहुँच गया। फिर इसके बाद निराला के पूर्णतः दिया है कवि क्षेत्री क्षेत्राधी ज्ञान और भाव विभाजन के स्तर भी यथार्थ्य रहे। प्रति: कवि ने "मुकुटमिर्तस", अन्यथा","लेख", "नए पत्रों" में बनाया काव्य, रस के रंग पर त्यंत्र का विकास किया और अगले युग में भाव विभाजन का केंद्र यथार्थ्य रहे। इसके उद्देश्य अपनी कहानियाँ और "अल्पाई" तथा "लिस्तमा" जैसे उपन्यासों में उसने समाज का कठोर यथार्थ्य विश्वासी दृष्टि से देखा।

निराला के बीच में इस प्रकार सन 1916 से "35 का एक सूपार धूरा होता हुआ दिखाई पड़ता है। फलनालों और रचनाओं में उसे स्पष्टतः देखा जा सकता है। केवल युद्ध में भयानक चोट आकर बीर गिर गया है। उसी प्रकार, "समरोध की मुल्य" पर वह धायल होकर एक बार गिरता हुआ परिलक्षित होता है। इसके पराभुत घटना ठेककर जब कवि उठ ढैठता है तो वह त्यंत्र की बोलियाँ से समाज पर विलुप्त करता है। यदि सन 1940 के बाद कवि विनोद बुखार अस्तित्व में उपस्थित नहीं रहते हैं। यदि वह संभावना मात्र है। हारा हुआ त्यंत्र विनोद से अपने को बंधा रहता है। विनोद या हारकर अन्य कटक की अवतारण को कम करता है, किन्तु निराला में विनोद से बीरता की मात्रा अधिक थी। बंगाल के अधिक उनके सरीर में फंसवाड़े के विकास का ओज था। जल्द: अस्तित्व संदेसनीलता ने उनकी वीरता को उत्पूर्वकी कर दिया और फिर वह समाज में प्रवेश वाले काव्य अपने ऊर्ध्व हो करने लगे।
"कुछ तो दुनिया की पिंजरत में सितमकीरी थी।
और कुछ हमने भी इससा साधा हार्द।" ।।

कुछ तो संसार के अस्त्रावार और कवि की अर्थपित सोहन शील
हस्तस्थर् प्रकृति, इन दोनों ने निराला को पागल बना दिया और अपनी आई -
चेतनाकथा में जब कवि जीवनी में सिंहार और बोलने की प्रतिभा कर चुका था, तब
थी कह अपने से ही प्रतिशृंखले ले रहा हो, मानो अपने आप से ही कह रहा हो -
"निराला। यदि दुनी हिंदी में न सिक्कर इतने अमूं और
प्रतिभा का प्रयोग जीवनी भाषा में किया होता तो वह तरी उपेक्षा होती कम
हुई इतना अर्थपित साहित्य सहना पड़ता।"

निराला का बाह्य रूप कठोरकिन्जु अंदर अस्त्रावर कल्पित था।
भारतीय संस्कृति अपनी समस्त कोमलता के साथ आपके रक्त में प्रवाहित हो रही
थी। निराला जी का जीवन विषमताओं, त्याग, समय, बलिदान और पौरा की
कहानी कहता रहा। हिंदी के लिए निराला फिट गए और फिटकर ही अमूं हो
गए। उनका हिंदी फास्नुर में अतिरिक्त तथा सर्वप्रारंभ स्थान है। वे हिंदी साहित्य
आकाश के सर्वाधिक प्रकाशमान नक्षत्र हैं।

श्री रामकृष्ण परमहंस और विश्वेश्वर की वेदांत कोधरा का
निराला जी पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। यही कारण है कि उनकी कविता में
सबे प्रभाव स्वर वेदांत का ही है। वर्तने के प्रभाव के कवि आशा-निराला, जय-
पराशक रूपों में प्रथम क्याप्त देखता है और इन सभी का पर्यावरण भी प्रथम में
ही देखता है।

|/।/ निराला का बहादुरत्व और कृतित्ववादक ग्रंथ नारायण टहन यू.035 |
"जीवन की विलय, सब पराजय,
चिर अतीत आशा सुख, सब भाव
सब में हुम, तम में सब लवह।" 

सांसठ ही "परिमल" की "जागो फिर एक बार" कविता है भी कवि मान्व को "ब्रह्म" बेलाता है और कहता है कि सारा यह विश्व भार बुझारी पदराज के बराबर भी नहीं।

अतः सभी छापावादी कवि निराशावादी हैं। निराला ही एकमात्र प्रक्ष आजावादी है। संकेत में कहा जा सकता है कि निराला का बुझप कवि है, मस्तिष्क दार्शनिक है, वेदान्त को उनकी स्पृहा में भी आ जाता है। उनकी पकोड़ीया भी वेदान्त को उपचित करती है। उनकी दार्शनिकता भावना प्रधान तथा विश्व प्रधान दोनों ही है। उनका कवित्वपुष्ट और सकि है। साहित्य की सभी विभागों के सर्वोत्तम चिराग चिन्हों की कवि 50 शृंखलाएँ त्रिपाठी निराला हिन्दी समाज के तथा गरीबों के सबीहा, शैक्षणिक तथा शैक्षिकों के प्रभाख करीर गर्दी तथा प्रेमसंह तथा प्रेमसंह तथा गरीबों के हितों विषय-धारामें अग्रणी एक यथानाम महाकवि है। निराला जी कविता के रचित तास मात्र नहीं, सब्जे एक चिराग महाकवि के नायक बनकर लिए और इतिहास बनकर उन्होंने 15 अक्टूबर 1961 के 8.30 बजे 9 बजे 23 मिनट पर क्ला मंदिर के छोटे से कमरे में दारागंज भ्रायाग वन अपनी जीवन लीता समाप्त करके स्वर्ग विधार

चिन्हों महाकवि निराला की साहित्य साधना रचिती संस्कृति और वैचारिक है। उनका विषयत्व भी उतना ही विलय और इतन्य भी।

/1/ निराला:भयक्तिष्ठ और कृतिक-गरो प्रेम नाराज़ बेडन पू0 29
उनकी मृत्यु से प्रगतिवादी, रूपिया का दूसरा सबसे महान कवि तथा समाज सेवक उठ गया। निराला ने जीवन का खिलाड़ी कुछ संघर्ष हेला और आपदाओं की रंग में प्रकार उनकी छाया छिपती रही, वैसा संभव है कि भारत के किसी भी दूसरे हलने बड़े साहित्यकार के साथ न हुआ होगा। कविय ने वाद उन्होंने ही जीवन में सबसे अधिक अविभाज्य गर्दन का पान किया था और आत्मनिर्भर नहीं इसीलिए उनके अवधक निरोपों के गर्दन का पान किया था और आत्मनिर्भर नहीं इसीलिए उनके कवि ने संभावना अत्यधिक आत्मविश्वास, हृदय के प्रति आनुभवक भाव और कान्तिशिशुता पाई जाती है। निराला जी का सारा जीवन सामाजिक कुरीतियाँ अंधविश्वासों और मानवता को जुटाते करने वाली अभिव्यक्तियाँ पर प्रभाव मिले करता बीमार। उनके साहित्य का एक बुद्धि अंश उनके छोटी संघर्ष का इतिहास है।